पुराण की परिभाषा

भारतीय वाङ्मय में पुराण साहित्य के लिए एक विशिष्ट और महत्त्वपूर्ण स्थान है। पुराण भारतीय जीवन साहित्य के रत्ननिर्मित अमूल्य श्रृंगार हैं। पुराण एक स्वर्णमयी श्रृंखला है जो अतीत को वर्तमान से जोड़ने के लिए प्रसिद्ध है। संस्कृत साहित्य में पुराण की अधिमान्यता है। वेद के पश्चात पुराण का ही नाम लिया जाता है। पुराण भारतीय संस्कृति के मेरुदण्ड हैं। वेद की महत्ता रहते हुए भी यह कहा जाता है कि पौराणिक ज्ञान के अभाव में वैदिक साहित्य का सम्पूर्ण रूप से अर्थावबोध असम्भव है। पुराण वेद प्रतिपादित सिद्धान्तों और तथ्यों को सरल शब्दों में और कथानक शैली के सहारे सामान्य बुद्धिवाले पाठकों को भी हृदयंगम करा देते हैं।

पुराण भारत का सच्चा इतिहास है। पुराणों से ही भारतीय जीवन का आदर्श, भारत की सभ्यता, संस्कृति तथा भारत के विभ्रा-वैभव के उत्कर्ष का वास्तविक ज्ञान प्राप्त हो सकता है। प्राचीन भारतीयता की झाँकी और प्राचीन समय में भारत के सर्वविध उत्कर्ष की झलक यदि कहीं प्राप्त होती है तो पुराणों में। पुराण इस अकाट्य सत्य के द्योतक हैं कि भारत आदि जगद्गुरु था और भारतीय ही प्राचीन काल में आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक उन्नति की पराकाष्ठा पर पहुँचे थे। पुराण न केवल इतिहास हैं, अपितु उनमें विश्व-कल्याणकारी त्रिविध उन्नति का मार्ग भी प्रदर्शित किया गया है।

पञ्चम वेद के रूप में दिव्य पौराणिक ज्ञान सर्वप्रथम ब्रह्माजी के द्वारा अभिव्यक्त हुआ –

"इतिहासपुराणानि पञ्चमं वेदमीश्वरः।
सर्वेभ्य एव वक्त्रेभ्यः ससृजे सर्वदर्शनः॥"

(श्रीमद्भागवत् /3/12/39)

अर्थात इतिहास और पुराण-रूप पाँचवें वेद को उन समर्थ, सर्वज्ञ ब्रह्माजी ने अपने सभी मुखों से प्रकट किया।

लोकभाषा में वर्णित होने के कारण वेदों की अपेक्षा पुराण अधिक लोकप्रिय हैं। उनमें प्रतिपादित मधुरातिमधुर आख्यानों एवं कथाओं की सग्रह की चर्चा जन-जन में सुनाई देती है।

यह प्रश्न सहज स्वाभाविक है कि 'पुराण' इस शब्द से क्या तात्पर्य है। इस शब्द की व्याख्या अनेक स्थानों पर भिन्न-भिन्न रूप में प्राप्त होती है।

Scanned with CamScanner

'पुरा अपि नवं पुराणम्' - इससे प्रतीत होता है कि पुराना होने पर भी जो नवीन है, वह पुराण है। इसी अर्थ में निरुक्तकार यास्क ने 'पुराण' शब्द की व्युत्पत्ति बताई है। वायुपुराण इसकी व्याख्या इस प्रकार करता है- 'यस्मात् पुरा ह्यनतीदं पुराणं तेन तत् स्मृतम्' अर्थात् जो पूर्व में भी सजीव था वह पुराण है। सायण ने इसे इस प्रकार स्पष्ट किया है- 'जगतः प्रागवस्थामनुक्रम्य सर्गप्रतिपादकं वाक्यजातं पुराणम्' अर्थात् संसार की उत्पत्ति और विकास-क्रम के बोधक को पुराण कहते हैं। पद्मपुराण का कथन है- 'पुरा परम्परां वष्टि पुराणं तेन तत् स्मृतम्' अर्थात् जो प्राचीनता अर्थात् परम्परा की कामना करता है वह पुराण कहलाता है।

~~पुराणों की प्रामाणिकता~~ →

पुराण सनातन हिन्दू धर्म के ग्रन्थ हैं। पुराण सभी श्रेणियों के नर-नारियों में विचित्र गतिमंजी से विचरने वाले हैं। केवल भारत के प्रान्तों में ही नहीं प्रत्युत भारत के बाहर अनेक द्वीप-द्वीपान्तर में पुराणों ने भारतीय सनातन वैदिक विचारधारा को प्रवाहित किया है। पुराणों में धर्म सम्बन्धी तथ्यों का समावेश किया गया है। पुराणों का यह श्लाघनीय प्रयास है कि वैदिक तत्त्वों को रोचक रूप देकर वैदिक धर्म को लोकप्रिय बनाये। श्रद्धापूर्वक पुराणों का अनुशीलन करने पर अनेक रहस्यपूर्ण तथ्यों का स्वरूप स्पष्ट हो जायेगा।

महर्षि याज्ञवल्क्य ने पुराणविद्या को प्रमुख स्थान दिया है। पुराणों में बताया गया है कि पहले पुराण एक ही था। मनुष्यों की स्मृति और विचार बुद्धि की दुर्बलता देखकर महर्षि वेदव्यास ने जहाँ वेद को चार संहिता रूप में विभाजित किया, वहाँ पुराण को भी अठारह विभागों में बाँट दिया। पुराणों में व्यासदेव ने अद्भुत कौशल से सर्वविध विद्याओं का अपूर्व संग्रह कर दिया है और इस प्रकार उन्होंने पुराणों के रूप में इस संसार को विश्वकोष उपलब्ध करा दिया है।

व्यासजी ने पुराण विद्या के लिए रोमहर्षण को अपना शिष्य बनाया और पुराण विद्या पढ़ाई। कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास ज्ञानशक्ति के अवतार माने गए हैं।

व्यास पदवी का नाम है। यह अधिकार का नाम है। ऋषि मुनियों में उनके कार्य या अधिकार के नाम ही प्रायः प्रसिद्ध होते हैं। जो ऋषि या मुनि जिस प्राणशक्ति का आविष्कारक या दूसरे शब्दों में उपासक रहा, वह उसी शक्ति के

Scanned with CamScanner

नाम से प्रसिद्ध हुआ। वशिष्ठ, विश्वामित्र, कश्यप आदि नाम उपास्य शक्ति के अनुसार ही प्रसिद्ध है। इसी प्रकार पुराणों के निर्माता का नाम कृष्णद्वैपायन है और पदवी या अधिकार का नाम व्यास या वेदव्यास है।

महर्षि वेदव्यास ने यह समझकर कि एक बड़ा जनसमुदाय वेदों में निहित ज्ञान से वञ्चित है, पुराणों का प्रणयन किया। वस्तुतः भारतीय साहित्य को व्यासदेव ने अत्युच्च गौरव के शिखर पर स्थापित किया है। व्यासजी साहित्य क्षेत्र की भाँति, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में भी एक प्रमुख नेता थे। व्यास भगवान् ने धर्म के ऐसे अंगों पर भी विशेष जोर दिया जिनमें वर्ण-जाति का भेद रुकावट न डाले, मनुष्यमात्र का जिनमें समान अधिकार रहे। भगवद्भक्ति, नामसंकीर्तन, तीर्थ, व्रतोपवास आदि का ही विस्तृत संग्रह पुराणों में किया गया है। हिन्दू संस्कृति के आधारग्रन्थ के रूप में व्यासकृत पुराणों की गणना की जाती है। धर्म, भक्ति का जो बीज व्यासजी ने पुराणों में वपन किया वही आज पुष्पित फलित दशा में दृष्टिगोचर होता है।

सरलभाषा में गंभीर अर्थों को स्पष्ट करने का श्रेय व्यासजी को ही प्राप्त है। सर्वसाधारण को समझाने के लिए ही अति गम्भीर विषयों को रूपक के साँचे में ढाल दिया। जानने योग्य सब विद्याओं का संग्रह पुराणों में किया गया है। भारतीय वाङ्मय गगन के बड़े नक्षत्र के रूप में व्यासजी की गणना होती है जिनकी प्रभा सर्वत्र प्रसरित है।

पुराण आर्यजाति का सर्वस्व है। पुराणों का आज भी बड़ा आदर है। पुराण एक विद्या है। इस पुराण विद्या का महत्त्व इससे स्पष्ट है कि याज्ञवल्क्य आदि महर्षियों ने विद्याओं की गणना में पुराण विद्या को प्रथम स्थान दिया है। जिस प्रकार गंगाजल में स्नान करने से सारे पाप नष्ट हो जाते हैं, उसी प्रकार पुराण का श्रवण करने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं-

"यथा पापानि पूयन्ते गंगावारिविगाहनात्।
तथा पुराणश्रवणाद् दुरितानां विनाशनम्॥"

(वामनपुराण 67/2)

Scanned with CamScanner

यज्ञ और कर्मकाण्ड के लिए वेद प्रमाण है। गृहस्थों के लिए स्मृतियाँ ही प्रमाण हैं। किन्तु वेद और स्मृतिशास्त्र दोनों ही सम्यक् रूप से पुराणों में प्रतिष्ठित हैं। जैसे परम पुरुष परमात्मा से यह अद्भुत जगत् उत्पन्न हुआ है, वैसे ही सम्पूर्ण संसार का वाङ्मय-साहित्य पुराणों से ही उत्पन्न है, इसमें लेशमात्र भी संशय नहीं है। वेदों में तिथि, नक्षत्र आदि काल निर्णायक और ग्रह संचार की कोई युक्ति नहीं बताई गई है। तिथियों की वृद्धि, क्षय, पर्व, ग्रहण आदि का निर्णय भी उनमें नहीं है। यह निर्णय सर्वप्रथम इतिहास-पुराणों के द्वारा ही निश्चित किया गया है। जो बातें वेदों में नहीं है, वे सब स्मृतियों में है और जो बातें इन दोनों में नहीं मिलती, वे पुराणों के द्वारा ज्ञात होती हैं —

"यज्ञकर्मक्रियावेदः स्मृतिर्वेदो गृहाश्रमे।
स्मृतिवेदः क्रियावेदः पुराणेषु प्रतिष्ठितः॥
पुराणपुरुषाज्जातं यच्चेदं जगदद्भुतम्।
तच्चेदं वाङ्मयं जातं पुराणेभ्यो न संशयः॥
न वेदे ग्रहसंचारो न शुद्धिः कालबोधिनी।
तिथिवृद्धिक्षयो वापि पर्वग्रहविनिर्णयः॥
इतिहासपुराणैस्तु निश्चयोऽयं कृतः पुरा।
यन्न दृष्टं हि वेदेषु तत्सर्वं लक्ष्यते स्मृतौ॥
उभयोर्यन्न दृष्टं हि तत्पुराणैः प्रगीयते।"
(नारदपुराण)

विद्वानों का अभिमत रहा है कि पुराणों के अध्ययन के बिना कोई भी विचक्षण नहीं हो सकता। पुराण धार्मिक दृष्टिकोण से ही महत्त्वपूर्ण नहीं अपितु सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं दार्शनिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण हैं। अष्टादश पुराणों में भारतीय सांस्कृतिक, सामाजिक एवं धार्मिक जीवन के प्रतिबिम्ब उसी प्रकार देखे जाते हैं, जिस प्रकार दर्पण में प्रतिबिम्ब। सरल एवं प्राञ्जल भाषा ही पुराणों का वैशिष्ट्य है। कथानक, शैली की क्रमबद्धता, सरल भाषा के कारण प्राचीन होने पर भी पुराण नवीनतम स्फूर्ति

* या विद्याश्चतुरो वेदान् साङ्गोपनिषदो द्विजः।
न चेत् पुराणं स विज्ञातं नैव स स्याद् विचक्षणः॥"

Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner

को संचारित करते हैं।

वेद संक्षिप्त तथा सूक्ष्म रूप हैं और पुराण उनके विस्तृत रूप से भाष्य के समान प्रकृत अर्थज्ञापक होकर वेदों की उपयोगिता को स्पष्टतः बढ़ा देते हैं। शास्त्रीय प्रतिपादन है कि इतिहास और पुराणों के द्वारा ही वेदार्थ का विस्तार होना चाहिए। जिन्होंने पुराणेतिहास आदि शास्त्रों का सम्यक् प्रकार से श्रवणाध्ययन नहीं किया उनसे वेदों को भय होता है कि वे मुझपर प्रहार कर देंगे –

"इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्॥
बिभेत्यल्पश्रुताद्वेदो मामयं प्रहरिष्यति।"

महाभारत/आदिपर्व/1/267-68

'इतिहासपुराणाख्यमुपाङ्गं च प्रकीर्तितम्' - इस प्रकार इतिहास और पुराण उपाङ्ग कहे गए हैं। इन वचनों के अनुसार मन्त्र-ब्राह्मणात्मक वेद से पृथक् इतिहास, पुराण का बोध प्राप्त होता है। महाभारत के मत में तो पुराणरूपी चन्द्रमा के द्वारा श्रुतिरूपी चन्द्रिका छिटकी हुई है अर्थात् पुराण श्रुति के अर्थ को विस्तार से प्रकाशित करता है –

"पुराणपूर्णचन्द्रेण श्रुतिज्योत्स्ना प्रकाशिता।"

महाभारत/आदिपर्व/1/86

वेदों की भाँति पुराण भी ईश्वर के निःश्वास हैं। अनेक स्थलों पर इसका उल्लेख प्राप्त होता है –

"अस्य महतो भूतस्य निश्वसितमेतद् यद् ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वाङ्गिरस इतिहासः पुराणम्।"

(वाजसनेयि ब्राह्मणोपनिषद् 2/4/10)

"ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह।
उच्छिष्टाज्जज्ञिरे सर्वे दिवि देवा दिविश्रिताः॥"

(अथर्ववेद 11/7/24)

"तमितिहासश्च पुराणं च गाथाश्च नाराशंसीश्चानुव्यचलन्।"

(अथर्ववेद 15/6/11)

"पुराणं सर्वशास्त्राणां प्रथमं ब्रह्मणा स्मृतम्।
अनन्तरं च वक्त्रेभ्यो वेदास्तस्य विनिर्गताः॥"

(मत्स्यपुराण 53/3)

Scanned with CamScanner